Email: csjmu@kanpuruniversity.org TEL: 0512-2080024

: 0512-2582251

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय

प्रेस विज्ञप्ति

कल्याणपुर, कानपूर

उत्तर प्रदेश-208024

दिनांक: 11-11-2021

दीनदयाल शोध केन्द्र, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय और संस्कृतभारती-कानपुरप्रान्त के संयुक्त तत्वावधान में "संस्कृत में भारतीय विज्ञान विषय" पर व्याख्यान माला का आयोजन हुआ साथ ही "नूतन शिक्षा नीति में संस्कृत शिक्षण" विषय पर कार्यशाला का आयोजन हुआ। जिसमें 18 महाविद्यालयों के

संस्कृत विभागों के 60 से अधिक आचार्यों की सहभागिता रही। साथ ही विभिन्न विभागों के 600 से अधिक प्रतिभागियों ने सहभागिता की। जिसका उद्घाटन करते हुए विश्वद्यालय के कुलपति प्रो० विनय कुमार पाठक महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि किसी के लिए गीता उपयोगी हो सकती है, किसी के लिए ज्योतिष तो किसी के लिए अन्य शास्त्र उपयोगी हो सकते हैं हमें संस्कृत के भिन्न भिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों की कुंजी बनानी होंगी जिससे लोग अपने आवश्यक की विषयवस्तु को पढ़ कर लाभ उठा सकें। हम सभी को संस्कृत के सभी नाटक या अन्य ग्रन्थ पढ़ने के लिए नहीं कह सकते क्योंकि उसका दूरगामी लाभ नहीं होगा लेकिन हम यह कह सकते हैं कि आप चिकित्सा क्षेत्र से हैं तो आप यह पढ़ सकते हैं, आप विज्ञान से हैं तो आप यह पढ़ सकते हैं। इसप्रकार विभिन्न विषयों की अनेक कुंजी बनाकर हम सार सार जन जन तक पहुंचा सकते हैं। आप लोग विचार कीजिए मन्थन कीजिए कि संस्कृत को कैसे आगे बढ़ा सकते हैं।

कानपुर विश्वविद्यालय संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिए संकल्पित है। एतदर्थ किसी भी प्रकार के संसाधन या धन की कमी नहीं होने दीजाएगी, हम प्रयास करेंगे कि संस्कृत को आगे लाने के लिए जो भी हो सके उसे कर सकें।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्रीश देवपुजारी अखिलभारतमहामन्त्री संस्कृतभारती ने कहा कि आज हम सब देह से तो भारतीय हैं, किन्तु बुद्धि से विदेशी हैं इसका मूल कारण हमारी शिक्षा व्यवस्था है अतः हम सभी को मिलकर शिक्षा व्यवस्था में सुधार कर बौद्धिक रूप से भी होना होगा। भारत में अंग्रेजों के आगमन से पूर्व हमारे सम्पूर्ण शास्त्र ग्रन्थ साहित्य आदि भारतीय भाषाओं में थे जिसके कारण भारत सर्वत्र अग्रगण्य था आज हमें उस ज्ञान सम्पदा के आधार पर ही भव्य भारत का निर्माण करना है।

सारस्वत अतिथि आई आई टी कानपुर के संगणक और प्रौद्योगिकी विभाग के प्रो० अर्णब भट्टाचार्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज जितनी आवश्यकता कम्प्यूटर की है उतनी ही संस्कृत की भी। संस्कृत को जानना ही नहीं अपितु उस पर गहन शोध करने और नवीन विषयों पर कार्य करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर सी०डी०सी० निदेशक डॉ राजेश कुमार द्विवेदी, दीनदयाल शोध संस्थान के निदेशक डॉ० ए० के० सिंह, प्रान्त अध्यक्ष अजित अग्रवाल, आचार्य चन्द्रप्रकाश त्रिपाठी, डॉ हिमांशु, डॉ सुधीर अवस्थी, डॉ संजय स्वर्णकार, डॉ आर् एन कटियार, डॉ सन्देश गुप्ता, डॉ नितिन, डॉ मनीष, श्रीमती प्रेरणा आदि गणमान्य जन विद्यमान रहे। स्वागत परिचय डॉ आशारानी पाण्डेय पाठ्यक्रमसमन्वयकः, संस्कृत और डॉ शोभा मिश्रा ने किया। कार्यक्रम की प्रस्तावना संस्कृतभारती के प्रान्त सङ्घटन मन्त्री प्रकाश झा व्यक्त की। व्याख्यान माला का संचालन डॉ विनोद कुमार पाण्डेय ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ अनिल सिन्हा ने किया।

विजेताओं का सम्मान

इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय के सभागार में(ऑडिटोरियम्) माननीय कुलपति महोदय द्वारा सम्मानित किया गया। जिसमें स्नातक स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता में ब्रह्मावर्त पी०जी० कॉलेज की मानसी तिवारी, परास्नातक स्तर पर वी०एस०एस०डी० कॉलेज की देवाँशिका द्विवेदी प्रथम स्थान पर रहे। वहीं वाद-संवाद प्रतियोगिता में आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय की अपेक्षा प्रथम व डी०ए-वी कालेज के दीपक मिश्र द्वितीय स्थान पर रहे तथा भाषण प्रतियोगिता में स्नातक स्तर पर दयानन्द गर्ल्स पी जी कॉलेज की आस्था शुक्ला प्रथम रहीं व परास्नातक स्तर जुहारी देवी महिला महाविद्यालय की अपेक्षा अस्थाना प्रथम रहीं।

डॉ मोहिनी शुक्ला के साथ डी जी कॉलेज तथा जुहारी देवी कालेज की छात्राओं ने संगीत बद्ध शारदा वन्दन प्रस्तुत् किया तथा वैदिक मङ्गलाचरण महर्षि भारद्वाज वेद गुरुकुल के आचार्य ज्ञानेन्द्र भारद्वाज और अन्य आचार्यों ने प्रस्तुत् किया।

इस संस्कृत महोत्सव के सफल आयोजन में अमित सामवेदी, सुधाकर तिवारी, आचार्य योगेश अवस्थी ,श्रीमती सन्ध्या गुप्ता सुकृति दीक्षित, दीपांशी, आद्रिका, जय, अंकित, आस्था, निशार आदि रहे।

नूतन शिक्षा नीति पर कार्यशाला

इस अवसर पर संस्कृत के परिप्रेक्ष्य में नूतन शिक्षा नीति पर शिक्षकों की कार्यशाला का आयोजन भी हुआ जिसमें 15 महाविद्यालयों के संस्कृत विभागाध्यक्षों और प्राध्यापकों ने सहभागिता की। जिसका उद्घाटन करते हुए संस्कृतभारती के अखिल भारतीय महामन्त्री श्रीश देव पुजारी ने कहा कि नूतन शिक्षा नीति संस्कृत के लिये नवीन द्वारों का सृजन कर रही है।

इस अवसर पर डॉ ज्ञान चन्द्र अवस्थी, डॉ प्रवीणा मिश्रा, डॉ गीता गुप्ता, डॉ शालिनी अग्रवाल, डॉ अनिता सोनकर, डॉ ममता, डॉ प्रीति वाधवानी, डॉ प्रदीप दीक्षित, डॉ सवितुर् गंगवार, डॉ रामेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, डॉ शन्नो देवी, डॉ मिथिलेश, डॉ वन्दना सिंह इत्यादि गणमान्य जन उपस्थित रहे।

कार्यशाला का संचालन डॉ मनोरमा आर्या तथा धन्यवाद ज्ञापन आचार्य चन्द्रप्रकाश त्रिपाठी ने किया। एक्यमन्त्र अमित सामवेदी ने किया।